RUSSIA UNDER LENIN (PART-2)

For :P.G Sem-2,CC-6,Unit-3

लेनिन और अक्टूबर-नवंबर 1917 की दूसरी क्रांति

लेनिन जब रूस पहुंचा तो राज्यक्रांति को हुए अभी एक मास हुआ था और बोल्शेविक पार्टी के लोग अस्थाई सरकार को अपना सहयोग दे रहे थे। लेनिन के आने पर परिस्थितियाँ बदल गई।लेनिन ने घोषणा की कि लोग रोटी, खेत और शांति चाहते हैं। उनको अस्थाई सरकार रोटी की जगह भूख, शांति की जगह लड़ाई और किसानों को खेत देने की जगह जमींदारों को खेत दे रही है। लेनिन ने लोकतांत्रिक क्रांति के बाद समाजवादी क्रांति की दिशा में जन आंदोलन को मोड़ने का कार्यक्रम बनाया। उसने रूस की भूमि पर आगमन के साथ ही कार्यवाहक सरकार के अंत तथा श्रमिकों की समितियों अथवा सोवियतों के हाथ में सत्ता के पक्ष में नारा दिया। उसने तत्काल युद्ध बंद करने की मांग की। लेनिन का यह कार्यक्रम **अप्रैल योजना (April thesis)** के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसी माह में अखिल रूसी बोल्शेविक अधिवेशन भी बुलाया और सारे रूस में युद्ध के अंत एंव सत्ता के हस्तांतरण के लिए आंदोलन का श्रीगणेश किया। उसका कहना था कि रुस के लिए न तो संसदीय गणतंत्र की

Scanned with CamScanner

आवश्यकता है और न शिक्षित मध्य श्रेणी के लोकतंत्र शासन की। हमें केवल ऐसी सरकार चाहिए जो किसानों, मजदूरों और सिपाहियों की सोवियतों के प्रतिनिधियों की हो। पहली राज्य क्रांति ने राज्य शक्ति को सम्राट, दरबारी और कुलीन लोगों के हाथों से छीन कर मध्य श्रेणी के हाथों में दे दी, अब समय आ गया है कि राजशक्ति मध्य श्रेणी के हाथों से निकलकर सर्व साधारण जनता, किसानों और मजदूरों के हाथ में आ जाए। राज्यक्रांति तभी पूर्ण हो सकती है जब आर्थिक और सामाजिक क्रांति हो और पूंजीपतियों और जमींदारों का वैसा ही विनाश हो जैसा सम्राट निकोलस द्वितीय और उसके राजवंश का हुआ। लेनिन के विचार उसके साथियों को काफी उग्र लगते थे उनका मानना था कि रूस जैसे पिछड़े हुए देश में साम्यवादी समाज इतनी जल्दी नहीं आ सकता लेकिन लेनिन को पूर्ण विश्वास था कि मौजूदा समय क्रांति के लिए पूर्णतः उपयुक्त है। **जुलाई 1917** में क्रांति का एक असफल प्रयास किया गया जिसे सरकार ने दबा दिया। लेनिन छिप गया और बोल्शेविक पार्टी को अवैध घोषित कर दिया गया। उसी समय रूस में विद्यमान ऐसे लोग जो निकोलस द्वितीय के वंश के पक्षपाती थे और सेना के ऐसे बड़े अफसर जो फिर से अपनी सत्ता और शक्ति स्थापित करने

Scanned with CamScanner

के लिए उत्सुक थे, उन्होंने **सितंबर** के प्रथम सप्ताह में **जनरल कोर्निलोव** के नेतृत्व में सामयिक सरकार की सत्ता को अंत करने के लिए विद्रोह किया परंतु वह असफल हुए और उन्हें शीघ्र ही दबा दिया गया। इससे लोगों की सहानुभूति एवं उम्मीदें बोल्शेविको के प्रति बढ़ गई । मौजूदा **क्रेन्सकी** की सरकार ने भी क्रांति के विरोधियों का मुकाबला करने के लिए वोलशेविकों का सहयोग लेना उचित समझा तथा पार्टी पर से प्रतिबंध हटा दिया गया। लेनिन पुनः सक्रिय हो उठा । क्रांतिकारियों ने पूंजी पतियों की षड्यंत्र कारी चाल को समाप्त करने के लिए सत्ता के हस्तांतरण के लिए सर्वत्र तैयारियां आरंभ कर दी। सारे देश में श्रमिक समितियों ने हड़ताल का आयोजन किया और कृषक विद्रोहों का तांता लग गया। अब सैनिकों की बारी थी। लेनिन ने उनके बीच भी बोल्शेविक समितियां कायम कर ली थी। क्रांति की योजना पैट्रोग्राड की सोवियत के अध्यक्ष की हैसियत से **ट्राटस्की** ने तैयार की। **5 नवंबर** को बोल्शेविक दल ने सशस्त्र क्रांति के पक्ष में निर्णय लिया और इसके बाद सैनिक क्रांतिकारी समिति का गठन किया जिसमें पेट्रोग्राड के डेढ़ लाख सैनिक शामिल थे। 6 नवंबर बुधवार के दिन सरकार ने बोल्शेविक केंद्रों पर छापे मारे परंतु अब लेनिन ने क्रांति का बिगुल बजा दिया

Scanned with CamScanner

था और **7 नवंबर 1917** को युद्धपोत **अरोरा** द्वारा राजमहल पर तोपों के आक्रमण ने क्रांति की चिंगारी पैदा की। बोल्शेविक स्वयंसेवकों ने पेट्रोगार्ड के रेलवे स्टेशन, पोस्ट ऑफिस, टेलिफोन एक्सचेंज, सरकारी बैंक, पुलिस कोतवाली और उसी प्रकार की अन्य सरकारी भवनों पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार बिना रक्तपात के पेट्रोगार्ड पर बोल्शेविकों का अधिकार हो गया क्योंकि सेना बोल्शेविक के साथ थी इसलिए करेन्सकी की सरकार कुछ भी न कर सकी। देश की राज्य शक्ति बोल्शेविक के हाथ में आ गई। इस प्रकार रूस में दूसरी क्रांति हुई। कार्यवाहक सरकार के सभी सदस्य कैद कर लिए गए और करेन्सकी विदेश भाग गया। उसी दिन शाम को लेनिन की अध्यक्षता में द्वितीय अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस का सम्मेलन हुआ जिसने रूस की सत्ता पर अपने अधिकार की घोषणा कर दी और स्थानीय सोवियतों को स्थानीय प्रशासन सौंप दिया। लेनिन के नेतृत्व में जनता के प्रतिनिधियों की समिति **जन कॉमिसार (Council of the people,Commissars)** का गठन किया गया । **लेनिन** को सभापति तथा **ट्राटस्की** को युद्ध मंत्री, **चिर्चरिन** को विदेश मंत्री नियुक्त किया गया। इस तरह

Scanned with CamScanner

लेनिन के नेतृत्व में अक्टूबर-नवंबर 1917 को रूस की बोल्शेविक क्रांति सफल हुई।

To be continued...

BY: ARUN KUMAR RAI

Asst.Professor

P.G.Dept.of History

Maharaja College,Ara.

Scanned with CamScanner